RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-1
Issue-4
April-2016

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

समकालीन भारतीय दर्शन में ईश्वर की अवधारणा

डॉ. राजनारायण व्यास

व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर (राज.)

मानव में पाई जाने वाली कतिपय मौलिक व नैसर्गिक प्रवृत्तियों में जिशासा का प्रमुख स्थान है। इसी के बल पर अपनी आदिम अवस्था से वर्तमान काल तक उसने अपनी समस्त बौद्धिक व ज्ञानात्मक क्षमताओं का उपयोग करते हुये जगत की उत्पत्ति, इसके स्वरूप व भविष्य तथा स्वयं के स्वरूप के बारे में न केवल विभिन्न प्रश्न उपस्थित किये है बल्कि अपनी क्षमता व सामर्थ्य के अनुसार इन प्रश्नों के समुचित समाधान का प्रयास भी करता रहा है।

अपनी इसी यात्रा के क्रम में उसने जहाँ पुनर्जन्म, परलोक आदि की अवधारणाओं का विकास किया, वहीं जगत के रचयिता, पालक, संहारक, नियंत्रक के रूप में एक परम सत्ता की कल्पना भी प्रस्तुत की, जिसे ईश्वर, भगवान, अल्लाहः आदि विभिन्न संज्ञाओं से दिश-काल भेद से निरूपित किया गया।

ईश्वर का संप्रत्यय विश्व में पाये जाने वाले विभिन्न धर्मों एवं संप्रदायों का एक महत्त्वपूर्ण व प्रायः आधारभूत बिन्दू रहा है। लगभग सभी संप्रदायों में या तो प्रत्यक्षतः ईश्वर का उल्लेख व वर्णन उपलब्ध होता है या फिर परोक्षतः वैसी किसी स्थिति-भगवत्ता की स्वीकृति के संकेत दिखाई पड़ते हैं। जिन संप्रदायों में प्रारम्भ में ईश्वर की स्पष्ट स्वीकृति नहीं मिलती उनके भी परवती विकास क्रम में ईश्वरवादी रुझान दिखाई पड़ता है। अस्तु! ईश्वर की अवधारणा के इस महत्त्व को देखते ह इस पर समुचित विचार करना न केवल वांछनीय अपितु अपरिहार्य हो जाता है। परम्परागत ईश्वरवादियों ने ईश्वर का जो स्वरूप प्रायः एक मत से स्थिर

किया है, उसके प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं :- ईश्वर की सत्ता काल्पनिक न होकर वास्तविक व यथार्थ है।

01 ईश्वर की सत्ता काल्पनिक न होकर वास्तविक व यथार्थ है।
02 वह साधारण भौतिक सत्ता नहीं अपितु पारमार्थिक सत्ता है।
03 ईश्वर का अस्तित्व निरपेक्ष व स्वयंभू है।
04 यह अनादि, अनंत व असीम है।

इन गुणों के अलावा विभिन्न संप्रदायों में स्वमतानुसार ईश्वर में न्यायप्रियता, क्षमशीलता, दयालुता आदि को भी स्वीकार किया है।

ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करने के में विभिन्न ईश्वरवादी विचारकों ने समय-समय पर अनेक युक्तियाँ भी प्रस्तुत की हैं। परम्परागत रूप से ईश्वर के समर्थन में दी जाने वाली प्रमुख युक्तियाँ इस प्रकार हैं :-

1. मूल कारण युक्ति - इसके अनुसार जगत् को एक विराट कारण कार्य श्रृंखला मानते हुये इसके मूल कारण के रूप में ईश्वर को सिद्ध किया जाता है।
2. प्रयोजनात्मक युक्ति - इसमें विश्व में उपलब्ध व्यवस्था व प्रयोजनात्मकता के आधार पर ईश्वर को स्वीकार किया जाता है
3. प्रत्ययसत्ता युक्ति कुछ विचारको (संत असेलम, देकार्त आदि) केअनुसार ईश्वर-प्रत्यय से ही ईश्वर का अस्तित्व प्रमाणित होता है।
4. व्यावहारिकतावादी युक्ति इसके अनुसार ईश्वर को स्वीकार करने पर मनुष्य को शांति, संतोष व पूर्णता की अनुभूति होती है, इसलिये व्यावहारिक दृष्टि सेउपयोगी होने के कारण ईश्वर मान्य है।
5. नैतिक युक्ति - इसके अनुसार हमारी सारी नैतिक व्यवस्था का मूलाधर ईश्वर है। इसको न मानने पर सम्पूर्ण नैतिक ढाँचा ध्वस्त हो जायेगा, अतः ईश्वर मान्य है।
6. धार्मिक अनुभूति की युक्ति - इस युक्ति के समर्थकों का दावा है। कि विभिन्न संतों, साधकों मनीषियों ने ईश्वर की अपरोक्ष अनुभूति की है जिसका संकेत उनके जीवन व रचनाओं में मिलता है। अतः उनकी अनुभूति के साक्ष्य से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

भारत में दर्शन व विचार की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। ऋग्वैदिक काल से आज तक किसी न किसी रूप में दार्शनिक चिन्तन की धारा यहाँ न्यूनाधिक रूप से हासिक वेतन है।

समकालीन भारतीय दार्शनिकों की श्रृंखला में भी अनेक कड़िया है परन्तु विस्तार भय से इनके प्रतिनिधि के रूप में उन कुछ विचारकों के ईश्वर संबंधों विचारों का सम्यक अवलोकन करने पर जिन्हें सम्पूर्ण दर्शन जगत में समकालीन भारतीय चिन्तन का प्रवक्ता कहा जा सकता है भी समकालीन भारतीय दर्शन में की अवधारणा का पर्याप्त परिचय हो सकता है। महात्मा गांधी स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन ऐसे ही विचारक हैं, जिन्हें निःसंदेह समकालीन

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

भारतीय दर्शन का प्रतिनिधि माना जा सकता है तथा जिन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपने-अपने विशिष्ट कार्यों व रचनाओं के माध्यम से भारतीय ईश्वरवाद के अभिनव आयाम उद्घाटित व प्रस्तुत किये हैं।

श्री मोहनदासकरमचन्द गाँधी अथवा महात्मा गाँधी इस शताब्दी के ही नहीं अपितु कई सहस्राब्दियों तक के प्रमुख विचारकों में परिगणित किये जा सकते हैं। गाँधी जी ने राजनीति, समाज सुधार, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय भूमिका निभाई परन्तु उनकी इन समस्त भूमिकाओं की धुरी उनका ईश्वर के अस्तित्व में दृढ़ विश्वास रहा है। अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमि से ईश्वर के अस्तित्य में विश्वास उन्हें बचपन से ही प्राप्त हुआ परन्तु अपने अनुभवों द्वारा उन्हें इस विश्वास का प्रमाण मिला तथा अपने मौलिक रचनात्मक कार्यों द्वारा उन्होंने इसकी पुष्टि की।

विभिन्न धर्मग्रंथों के अध्ययन मनन तथा विभिन्न विद्वानों से गंभीर चर्चाओं के उपरान्त गाँधी इस निर्णय पर पहुँचे कि सभी धर्म सच्चे हैं पर सभी अपूर्ण हैं। यह अपूर्णता उनमें ईश्वर-प्रदत्त नहीं है अपितु उनके अनुयायी मनुष्यों की अपूर्णता का प्रतिफलन हैं गांधी जी ने ईश्वर के समर्थन में दी जाने वाली परम्परागत युक्तियों का प्रायः प्रयोग किया परन्तु वे मानते थे कि किसी व्यक्ति को ईश्वर का निश्चयात्मक ज्ञान इन प्रमाणों से नये कर ईश्वर की साक्षात अनुभूति से ही हो सकता है। ईश्वर नानवीय बुद्धि से परे है अतः इस अर्थ में तो कोई प्रमाण पूर्णतः संतोषप्रद नहीं सकता क्योंकि समस्त प्रमाण-व्यवहार बौद्धिक ही होता है। बौद्धिक ज्ञान मानवीय ज्ञान
में ईश्वर को इदय या कि ज्ञान का विषय नहीं मानते। उनके अनुसार, "जहाँ बुद्धि निरुपाय से जाती है वहाँ श्रद्धा का आरम्भ होता है।" इस वृद्धा की प्राप्ति गाँधी के अनुसार, "भवित से सत्संग से होती है।"

गांधी के लिये ईश्वर एक है, अद्वितीय है वह अगम्य, अज्ञेय,

सर्वव्यापी ... निराकार और अभेद्य है।"

गाँधी ईश्वर को सत्य के रूप में देखते हैं। पारंपरिक कथन, "ईश्वर, सत्य है" को पलट कर वे कहते हैं "सत्य ईश्वर है ।" उनके अनुसार ईश्वर के अन्य नाम व स्वरूप को लेकर तो साम्प्रदायिकमतवैभिन्य व संघर्ष हो सकता है पर सत्य को ईश्वर मानकर इन सबसे बचा जा सकता है।

गाँधी ईश्वर को एक अव्यक्त, अपरिमत, रहस्यमयी, सर्वव्यापी, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, पूर्ण, सत्य, सर्जनहार व आत्मीय सत्ता मानते हैं। वे "संतों की साक्षी पर विश्वास की सलाह देते हैं तथा सर्वव्यापक ईश्वर की उपासना किसी भी रूप में की जा सकती है, इस आधार पर मूर्ति-पूजा को भी स्वीकारते हैं। उनके अनुसार, "मूर्ति परमेश्वर नहीं है, बल्कि लोग मूर्ति में परमेश्वर का आरोपण करके उसकी आराधना में तल्लीन होते हैं। तो इसमें बुराई क्या है?" गाँधी ने ईश्वर की उदात्त अवधारणा प्रस्तुत करते हुए कहा, "मेरा ईश्वर तो मेरा सत्य और प्रेम है नीति और सदाचार ईश्वर है, निर्भयता ईश्वर है।" गाँधी मानते हैं कि प्रार्थना व ईश्वर भजन द्वारा ईश्वर के समीप पहुँचा जा सकता है। लेकिन कोरी प्रार्थना में उनया विश्वास नहीं है। उनके अनुसार ईश्वर का नाम लेना व ईश्वर का काम करना, ये दोनों साथ-साथ चलने चाहियें। वे मानते हैं कि प्रार्थना का अर्थ ही स्वयं को, ईश्वर प्रदत्त कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पण की घोषणा करना है। अपने सत्याग्रह आंदोलन में भी गांधी ने ईश्वर की अवधारणा से प्रेरणा ली है। उनके अनुसार सत्याग्रही के लिये ईश्वर में आस्था होना पहली शर्त है। इसी से सत्याग्रही को निष्ठापूर्वक परिणाम-निरपेक्ष होकर कर्तव्य पालन की शक्ति प्राप्त होती है। गाँधी ने ईश्वर को मानवता से अपृथक मानकर मानव सेवा को भी ईश्वरीय सेवा का ही रूप माना। अतः उनकी समाज-सुध आर गतिविधियाँ भी मूलतः उनकी इसी धारणा से संप्रेरित हैं। ईश्वर को परम शुभ मानते हुए गाँधी प्राकृतिक व नैतिक नियमों में कोई विरोध नहीं देखते तथा अशुभ के सोच, एक समाज सुधारक की सेवा भावना, एकताका तथा एक और विचारक की सहिष्णुता का सुन्दर समन्वय है जिसे उन्होंने अपने आचरण द्वारा निरंतर प्रदर्शित किया।

विश्व मनीषा को भारतीय दर्शन के गौरव व प्रौढ़ता से परिचित करवाने वाले अग्रणी विचारकों में स्वामी विवेकानन्द संभवत: सर्वाधिक सफल व चर्चित रहे हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा में उपनिषद, गीता, वेदान्त के विभिन्न सम्प्रदायों आदि से अपने विचार बीज प्राप्त कर अपने गुरू स्वामी रामकृष्ण परमहंस के मार्गदर्शन में विवेकानन्द ने उसे भली-भांति पल्लवित पुष्पित कर एक सपन बट वृक्ष के रूप में अन्तर्राष्ट्रीय विचार तल पर प्रस्तुत किया। अद्वैत वेदान्त की भांति परमतत्व को एक न मानते हुए भी विवेकानन्द उसके निर्गुण व सगुण दोनों रूपों को स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर या ब्रह्म एक ही साथ सगुण व निर्गुण दोनों है उनके ईश्वर की अवधारणा में अवतारवाद को भी स्थान दिया गया है। इसके साथ ही वह प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर का वास मानते है "अपना मस्तक ऊँचा करो, तुममें से हर व्यक्ति के भीतर एक ईश्वर विद्यमान है।" उनके अनुसार, "ईश्वर एक वृत्त है जिसका केन्द्र सर्वत्र है और परिधि कहीं नहीं है।" ईश्वर के बारे में भिन्न भिन्न वर्णन व कथन तो "केवल दृष्टि के परिणाम और भेद हैं।" और मूलतः ईश्वर एक ही है। ईश्वर को विवेकानन्द सर्वत, सर्वशक्तिमान, अखंड व समस्त सृष्टि की समष्टि मानते हैं। उनके अनुसार मनुष्यों के बौद्धिक स्तर भेद के आधार पर उन्हें एक ईश्वर की ओर उन्मुख करने के लिये ही विभिन्न प्रकार के सम्प्रदाय निर्मित हुए हैं। इन सभी में जिज्ञासु की पात्रता के भेद से विविधता है परन्तु इन सबके क्रम में मूलतः एकत्व का ही अन्वेषण है। ये ईश्वर को जगत का उपादान, निमित्त व लक्ष्य कारण मानते हैं। अपने ईश्वर विचार में विवेकानन्द ने निर्गुण-सगुण, व्यावहारिक-पारमार्थिक आदि विरोधी मतों का अनूठा समन्वय किया तथा अद्वैत वेदान्त से प्रभावित होते हुए भी ईश्वर की अवधारणा को उससे भिन्न व मौलिक रूप में प्रस्तुत किया। वे ईश्वर को सर्वव्यापी व विश्वातीत, दोनों एक साथ स्वीकार करते हैं तथा ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानते हुए उसमें मानदीय गुणों को भी मान्यता देते हैं। उनके अनुसार ईश्वर भी, “मानव के समान दयालु, न्यायप्रिय व

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

शक्तिशाली है। मनुष्य ईश्वर तक पहुँच सकता होता है।" टैगोर का श्रमण-कण में उसका मानवीय संबंध है। उनको यह संसार भी "भगवान द्वारा मुझे दिया गया परमात्मा का आत्मा के लिये उपहार" प्रतीत होता है। ये ईश्वर को केवल तत्त्वमीमासीय संप्रत्यय न मानकर उसे एक जीवंत, व्यक्तित्वपूर्ण, मानवीय सत्ता मानते हि जिसे "मानव के समीप लाना होगा" वे ईश्वर के संबंध में साक्षात् अनुभूति को ही प्राथमिक प्रमाण मानते हैं लेकिन यह अनुभूति असाधारण मनुष्यों, रोगियों आदि को ही प्राप्त है। अतः टैगोर ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिये अपनी रचनाओं में यत्र-तत्र कुछ युक्तियाँ भी प्रस्तुत करते हैं। वे व्यवस्थामूलक एकतामूलक, आनन्दमूलक आदर्शमूलक आदि विभिन्न तर्फे ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण के रूप में देते हैं। टैगोर धर्म की मानवतावादी अवधारणा का समर्थन करते हैं। मनुष्य, ईश्वर द्वारा निर्मित सर्वोच्च कृति है। एक और वे मानव को ऐसा महान प्राणी मानते है जिसकी श्रेणी में ईश्वर की भी अग्रसर होना पड़ता है तो दूसरी ओर ईश्वर के सारे गुण आरोपित कर वे मानव को ईश्वर के रूप में व्यक्त करते हैं। टैगोर का ईश्वर एक अर्थ में परमतत्त्व है तो दूसरे अर्थ में परमपुरुष । उनका धर्म मानव धर्म है और उनका ईश्वर मानवीय ईश्वर। टैगोर को कवि-दार्शनिक कहा जाए या दार्शनिक-कविः मंत्रदृष्टा वैदिक ऋषियों से कबीर, मीरा, चैतन्य महाप्रभु आदि तत्त्ववेत्ताओं की श्रृंखला की महत्त्वपूर्ण कड़ी है जिनमें यह सम्पूर्ण धारा प्रतिबिम्बित व प्रतिध्वनित होती है। बीसवीं शताब्दी में भारतीय दर्शन के सरोवर में प्रफुल्लित सुमन दल में महर्षि अरविन्द सर्वाधिक सौरभमय अरविन्द कहे जा सकते हैं। अरविन्द ने अपने प्रारम्भिक जीवन में सिविल सेवा परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर अपनी असामान्य मेधा का परिचय दिया वहीं राजनैतिक क्रिया कलापों व स्वतन्त्रता आन्दोलन में कान्तिकारी गतिविधियों से भी अपनी असाधारण प्रतिभा का लोहा मनवाया। पर शीघ्र ही यह विलक्षण व्यक्तित्व विशुद्ध दर्शन के क्षेत्र में अपने मौलिक विचारों के साथ उदित हुआ। महर्षि अरविन्द ने अद्वैत वेदान्त की समुचित समीक्षा करते हुए उसे अपूर्ण ठहराया तथा कुछ अभिनव व मोलिक संप्रत्यय सम्मिलित कर अपना पूर्ण अद्वैत दर्शन प्रस्तुत किया। अद्वैत मत के संस्थापक आचार्य शंकर ने अपने मत के समर्थन में जहाँ पारमार्थिक दृष्टि से अमृतं सत् व जगत्-मिथ्यात्व का प्रतिपादन किया वहीं अरविन्द का अद्वैत विकास प्रगति सेट के पराय ब्रह्म से जड़ दोनों का समन्वय हो जाता है। जगत में जड़ से सर्वोच्य नानक चेतना का ही क्रमिक विकास है। इस विकास के स्तरे भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु विस्वव्यापी चेतना एक है, अद्वैत है। इस विकास के सर्वोच्च स्तर को अरबिन्दसत् चित आनन्द की समष्टि के रूप में सच्चिदानन्द भी कहते हैं। इसी सच्चिदानन्द के सृजनात्मक आयाम के रूप में अरविन्दअतिमानस की अवधारणा प्रस्तुत करते है जिसे वे ईश्वर भी कहते हैं। अरविन्द द्वारा प्रस्तुत अतिमानस की यह अवधारणा दुर्गम व दुर्बोध होने पर भी उनके सिद्धांत में संगत व अनिवार्य है। उनके अनुसार मच्चिदानन्द व विश्व, ज्ञान और अज्ञान के मध्य की कड़ी अतिमानस है। यह सामान्य मानस से ऊपर और सच्चिदानन्द से नीचे की स्थिति है जो विशेष सच्चिदानन्द में निहित अनन्त संभावनाओं का सान्त स्वरूप में वास्तवोकरअतिमानस स्तर पर ही हो सकता है। इस स्तर को स्वीकार किये बिना विश्व के आविर्भाव व सर्जना का स्पष्टीकरण असंभव होगा। यह अतिगान स्तर या ईश्वर, इस विश्व का सृष्टिकर्ता, पालक व संहारक है, विश्व की समस्त विविधता का आधार है। अरविन्द के दर्शन में ईश्वर भी पारमार्थिक सतु है जिसका निषेध किसी भी स्थिति में नहीं किया गया है। यहाँ शंकर द्वारा प्रतिपादित ईश्वर के संप्रत्यय से भेद दिखाई पड़ता है। अतः ईश्वर की यह अवर आरणाअरविन्द दर्शन में केंद्रीय महत्त्व रखती है और प्रत्यक्षतः इसके समर्थन में प्रमाण न देते हुए भी अरविन्द ने अपने अतिमानससंप्रत्यय में पारंपरिक प्रमाणों कारणमूलक, प्रयोजनमूलक, नैतिक आदि का सुन्दर समावेश किया है।

डॉ. सर्वपल्लीराधाकृष्णन का नाम समकालीन भारतीय दर्शन को शास्त्रीय अन्तर्धारा के प्रतिनिधि के रूप में अग्रगण्य है। दर्शन के एक गम्भीर अध्येता लोकप्रिय प्राध्यापक व प्रीड विचारक के साथ स्थान का योगदान एक कुशल राजनयिक राजनेता विश्व के महानतम लोकतन्त्र के राष्ट्रपति के रूप में भी उल्लेखनीय रहा है। उन्होंने देश-विदेश में विभिन्न विश्वविद्यालयों व शिक्षा केन्द्रों में अपने पूर्ण भाषणों तथा अपनी श्रेष्ठ, विचारपूर्ण कृतियों के माध्यम से समूची- विश्य मनीषा का ध्यान भारतीय दर्शन की ओर आकृष्ट किया तथा भारतीय दर्शन परम्पराकोअवदान द्वारा इस परम्परा संबंधी विचार उल्लेखनीय है। उपनिषदों के

आत्मन् को मानते हुए इनका अभेद स्वीकार किया है। उनके अनुसार यह परमतत्व चेतन है। जड को परमतत्य मानने वाले मत का से खंडन करते है। ये स्वयं को आध्यात्मवादी की अपेक्षा आदर्शवादी मानते हैं। उनका परमतत्व निर्गुण, निराकार, अनादि, अनन्त, अविकारी, देश-काल और वर्णन से अतीत है। परन्तु सगुण ईश्वर को भी वे इस निर्गुण ब्रह्म की एक निश्चित और यथार्थ अभिव्यक्ति के रूप में मान्यता देते हैं। राधाकृष्णन निरपेक्ष अहा को स्वीकार करते हुए भी ईश्वर की आवश्यकता सिद्ध करते हैं। उनके अनुसार ईश्वर मानव की कुछ गहरी व वही आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला आवश्यक है। वे शंकर के अद्वैत वेदान्त के रामानुज के विशिष्ट को भी सत्य की सर्वोच्च अभिव्यक्ति मानते हैं। इनके अनुसार मानव की धार्मिक क्रियाओं के लिये ईश्वर आवश्यक है। वे जगत और इश्वर में 'ऑरगेनिक' संबंध स्वीकार करते हैं। ईश्वर विश्वव्यापी है और काल-प्रक्रिया से हुआ है। यह सृष्टि का कर्त्तापालकमंहारक है। राधामन ईश्वर को गिद्ध के लिये बौद्धिक प्रमाणों की अपर्याप्तता बतलाते हुए भी कुछ परम्परागत प्रमाणों को प्रस्तुत करते हैं। इनमें प्रयोजनमूलक, कार्यकारणमूलक, नीतिमूलक आदि प्रमाण प्रमुख है। लेकिन इन प्रमाणी के बाद भी ईश्वर की अनुभूति के लिये अन्तर्दृष्टि के रूप में एक मौलिक साधन या प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यह सामान्य इन्द्रिय ज्ञान से भिन्न आंतरिक ज्ञान है, जिससे सत् की सोनुभूति होती है। इसमें ज्ञान का विषय व विषय दोनों स्वयं आत्मा होती है। अतः अन्तर्दृष्टि, तक की विरोधी न होकर उसकी पूरक है। रामाकृष्णन इसे चिन्तन से पूर्ण स्वतंत्र न मानकर इसे चिन्तन का हो एक विशिष्ट रूप मानते हैं। इस प्रकार राधाकृष्णन के दर्शन में जहां ईश्वर, अद्वैत मत की तरह काल्पनिक न रहकर एक यथार्थ सत्ता है तथा उसके अनुभव व साक्षात्कार हेतु अन्तर्दृष्टि के रूप में एक

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

मौलिक साधन भी बतलाया गया है। स्पष्ट है कि डॉ कृष्णद्वारा प्रस्तुत इन विचार बिन्दुओं से भावी अध्येताओं को सार्थक मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है।

में यह विशेष रूप से वृष्य है "राधामन द्वारा प्रस्तुत्य में भी इसकी गूंज सुनाई देती है। इस पहलू पर भी आगे की संभावना है। टैगोर के प्रकृतिवादीमत से प्रकृति प्रेम और पर्यावरण संरक्षण जैसी दिशाओं में बढ़ा जा सकता है। इनका मानवतावादी स्वर भी ध्यान देने योग्य है। विवेकानन्द और अरविन्द में राष्ट्रप्रेम अपने उत्कृष्ट रूप में उपस्थित है। अरविन्द तो भारत के भविष्य के प्रति बहुत आशान्वित हैं और वे इसे ईश्वर द्वारा प्राप्त भविष्यवाणी मानते हैं। विवेकानन्द के दर्शन में ईश्वर के संप्रत्यय के साथ ही समाज के सभी वर्गों विशेषतः युवाओं के पुनरुत्थान व जागरण का आहान अजीत रूप में मिलता है। राधाकृष्णन भारतीय दार्शनिक वैभव पर मुग्ध और इस पर की गयी किसी भी आलोचना या आरोप का सतर्क प्रतिउत्तर देते हैं। इन सभी में उपलब्ध अपने राष्ट्र व परम्परा के प्रति यह गौरव बोध भारत के पुननिर्माण का नक्शा प्रस्तुत करने में सक्षम हैं।

यह विश्वास किया जा सकता है कि इस अध्ययन में प्रस्तुत ईश्वर की अवध आरणा का समुचित प्रचार होने पर न केवल ईश्वर सबंधी जातियों का समाहार होगा अपितु वर्तमान में बढ़ते सामदायिक विद्वेष, असहिष्णुता, साम्प्रदायिक दंगों तथा राष्ट्र द्रोह की भावनाओं आदि के शमन एवं समाधान में भी यह अध्ययन उपयोगी सिद्ध हो सकेगा।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved